के बारे में छान-बीन की जा रही है और इसे गृह-मंत्रालय (Home Ministry) और राज्य सरकारों की सलाह से तैयार किया जा रहा है।

श्री भक्त दर्शन : क्या यह सत्य है कि पिछले दिनों जो मुख्य मंत्रियों का सम्मेलन दिल्ली में हुआ था, उसमें इस सम्बन्ध में बातचीत की गई थी और मैं जानना चाहता हूं कि आखिर वे कौन से आधार हैं जिनको लेकर आगे यह स्कीम बनाई जा रही है?

श्री शाहनवाज खां : जी हां, यह मसला ५ जून, १९५७ को जब मुख्तलिफ सूबों के बड़े वजीर यहां जमा हुए थे, तब उनकी कान्फ्रेंस में रेलवे मिनिस्टर साहब ने उनके साथ इस चीज के ऊपर बहस की थी। इस स्कीम का मक़सद यह है कि जो लोग रेलवे लाइनों के ऊपर की तरफ रहते हैं और जहां से पानी आकर रेलवे लाइन को नुकसान पहुंचा सकता है या रेलवे लाइनों के ऊपर बड़े बड़े तालाब हैं जिनके कि फ़ौरन टूटने से नुकसान हो जाता हो, इस किस्म की खबरें वे रेलवे मन्त्रालय को समय पर दे सकें।

श्री भक्त दर्शन : अब इस साल तो बरसात शुरू हो चुकी है तो क्या यह आशा की जा सकती है कि इस साल इस पर अमल शुरू हो सकेगा?

श्री शाहनवाज खां : ऐसी स्कीमें जिनमें एक से ज्यादा मिनिस्टरों का ताल्लुक होता है उन को मुकम्मिल करने में जरा वक़्त लग जाता है।

श्री भक्त दर्शन : इस कार्य में गांव वालों से जो सहायता ली जायगी वह श्रमदान के रूप में ली जायगी या उनको इस कार्य के करने के लिए कुछ मुआविजा भी मिलेगा?

श्री शाहनवाज खां : दोनों तरह से कराया जायगा, वैसे रेलवे कोई बहुत ज्यादा मुफ्त काम कराने में एतकाद नहीं रखती है और काम कराई के पैसे देती है।

श्री विभूति मिश्र : मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार ने कोई समय निश्चित किया है कि इतने दिनों के अन्दर इस स्कीम को चालू करेंगे अर्थात् कितने दिनों के अन्दर यह काम हो सकेगा या वह केवल बातचीत का जाल ही बन कर रह जायगी?

श्री शाहनवाज खां : स्कीमें तो बहस मुबाहिसे और बातचीत से ही मुकम्मिल हो सकती है उसमें कोई सख्त और कड़ी तारीख नहीं रक्खी जा सकती।

भूख के कारण मौत

*७८५. श्री विभूति मिश्र :
पंडित हृदय नाथ तिवारी :
डा० राम सुभग सिंह :
श्रीमती इला पालचौधरी :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या मई, १९५७ से १५ जुलाई, १९५७ तक की अवधि में विभिन्न राज्यों के उन क्षेत्रों में जहां खाद्य की कमी है भूख के कारण कोई मौत हुई; और

(ख) यदि हां, तो कितनी और कहां कहां?

कृषि उपमंत्री (श्री मों० वे० कृष्णप्पा): (क) जी नहीं।

(ख) प्रश्न नहीं उठता।

श्री विभूति मिश्र : हमारे मंत्री जी ने देखा है कि कुछ इंटरेस्टेड पार्टीज लिख देती हैं कि इतनी मौतें स्टार्वेशन से हो गईं, जब ऐसी चीज नहीं है तो क्या सरकार उस सम्बन्ध में अखबार वालों के और जो इस तरह की खबरें अखबारों में छपवाते हैं, उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही करती है।

Shri M. V. Krishnappa: Generally, we are in touch with all the States. The States will be informed of any news of starvation deaths. We also get such news in the press often and we send the information to the concerned

states to investigate, and we get reports from them. So far we have sent all the press cuttings we received and it has been proved that they were not starvation deaths; in most cases, they were natural deaths.

श्री विभूति मिश्र : मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार कोई इस प्रकार की कार्यवाही करता है ताकि इस तरह के गलत समाचार अखबारों में न छपें।

Shri M. V. Krishnappa: It is for the State Governments to take any action they want. As for the truth of the reports in the Press, we leave it to the public to believe them or not Naturally if something is repeated again and again without basis, people will lose belief in it.

Mr. Speaker: All that he wants to know whether the Central Government after inquiry and finding that the deaths are not due to starvation, publish their findings thus contradicting press reports.

The Minister of Food and Agriculture (Shri A. P. Jain): The fact is that food is essentially a responsibility of State Governments When we find such newspaper reports, we make enquiries from the State Government It is for the State Government to prosecute the people or take any action they like.

Mr. Speaker: Is it published in the press that the reports are wrong or incorrect?

Shri A. P. Jain: In many cases, State Governments have done so.

Pandit D. N. Tiwary: Are Government aware that in many cases the deaths are not apparently due to starvation in the sense that due to starvation, other diseases occur and therefore, deaths take place? Are such deaths published as starvation deaths or deaths by disease?

Mr. Speaker: In due course, every man dies on account of languishing for a number of years.

Pandit D. N. Tiwary: This is really on account of starvation.

Mr. Speaker: Every disease arises out of over-feeding or under-feeding.

Shri Nagi Reddy: The Minister has told us that most of the deaths were not starvation deaths. What about others? When most are not, then, there must be some. The rest must be starvation deaths.

Shri M. V. Krishnappa: In most cases they are natural deaths; and that means that the other cases are deaths due to diseases and various other causes.

Shrimati Ila Palchoudhuri: May I know whether Government are aware that a child of 7 years died in front of its mother in Azamagarh and has it been investigated and what is the result?

Shri A. P. Jain: We have made an enquiry from the U. P. Government and they have informed us that no starvation deaths have taken place there

Food Production

*786. **Shrimati Tarkeswari Sinha:** Will the Minister of Food and Agriculture be pleased to state:

(a) what was the estimated target of food production during 1956-57;

(b) the actual increase in the food production;

(c) whether there has been a shortfall in the estimated target; and

(d) if so, the reasons therefor?

The Deputy Minister of Agriculture (Shri M. V. Krishnappa): (a) The target of additional production of foodgrains during 1956-57 was fixed at 1·37 million tons that is 1 million tons under Grow More Food and .37 million tons under major irrigation.

(b) The actual increase is estimted at 3·64 million tons.

(c) No. On the other hand the target has been exceeded by 2·27 million tons.